ललितपुर जनपद के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर के छात्र–छात्राओं की व्यक्तित्व प्रतिभाओं केसंदर्भ में एक अध्ययन

डॉ. अनिल सूर्यवंशी एसोसिएट प्रोफेसर फिजिकल एजूकेषन

नेहरू पीजी कॉलेज ललितपुर

प्रस्तावना

निर्माण में व्यक्तित्व का एक विशेष प्रभाव पड़ता है एक शिक्षक शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना होता है साधारणता व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के बाह्यय रूप से लगाया जाता है लेकिन मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से व्यक्ति चुना तो भाई आवरण ही है और ना ही आंतरिक तत्व बल्कि दोनों ही है व्यक्तित्व का कोई स्थिर अवस्था ना होकर एक गतिशील स्वस्थ है जो पर्यावरण के प्रभाव से कैसे बराबर बदलती रहती है व्यक्तित्व व्यक्ति के आचरण विचार व्यवहार क्रियाओं गतिविधियों सभी बातों से स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है व्यक्तित्व शब्द का व्यक्ति के चरित्र या नैतिकता के पर्यायवाची शब्द के रूप में प्रयोग करते हैं चरित्र संबंधी कुछ गुणों से मुक्त होने पर व्यक्तित्व को अच्छे व्यक्तित्व वाला कुछ अवगुणों या सामाजिक बुराइयों से ग्रस्त होने पर बुरे व्यक्तित्व वाला कहा जाता है व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग भी अपूर्ण और अनुचित है चरित्र सभी प्रकार से केवल नैतिकता और आचरण संहिता से अपना संबंध रखता है जबकि व्यक्तित्व में मानव को संपूर्ण बनाने से संबंधित सभी पक्ष समाहित होते हैं मनोवैज्ञानिक भाषा में व्यक्तित्व अपने आप से जो कुछ भी है वह उसका व्यक्तित्व है अपने प्रति और दूसरों के प्रति किए जाने वाले व्यवहार का एक समग्र चित्रण ही व्यक्तित्व कहलाता है इस प्रकार निश्चित रूप से व्यक्तित्व शब्द भाई रूप से आकृति और व्यवहार से अधिक संजोए हुए हैं जिसका निश्चित शब्दों में परिभाषित करना कठिन कार्य है

आधुनिक युग में बढ़ती हुई व्यवसायिकता ने गला काट स्पर्धा को जन्म दिया है जीवन के हर क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन एवं दृष्टिकोण को जन्म दिया है इस स्पर्धा के लिए तैयार होने के लिए एक महत्वपूर्ण गुण है व्यक्तित्व व्यवसाय प्रबंधन से लेकर प्रशासनिक सेवाओं में खेल के मैदान से लेकर राजनीति के मैदान में हर एक व्यक्ति को एक महत्वपूर्ण गुणों की आवश्यकता है व्यक्तित्व के विकास के लिए छात्र छात्राओं से लेकर बड़े बड़े व्यवसाई एवं राजनेता प्रोफेशनलो की मदद लेते हैं

कैसे व्यक्तित्व के से दोषों को केसे दूर करे और अधिक बेहतर बनाया जा सके

आमतौर पर अच्छे अच्छे व्यक्तित्व का अर्थ हष्ट पुष्ट स्वस्थ शरीर और अच्छी पर्सनैलिटी को मानते है परंतु दोनों ही विचारधारा गलत है व्यक्तित्व ना तो अच्छा चरित्र और ना ही हष्ट पुष्ट शरीर है चरित्र समाज के मान्यताओं के अनुरूप व्यवहार को कहा जाता है या व्यवहार कभी अच्छा तो कभी बुरा रक्षात्मक कभी आक्रम हो सकता है यह व्यवहार कभी अच्छा तो कभी बुरा कभी अच्छा रक्षात्मक तो कभी आक्रमक हो सकता है उपरोक्त दोनों ही उदाहरण व्यक्तित्व का उपयुक्त विश्लेषण नहीं करते हैं

व्यक्तित्व का विकास व्यक्तित्व अंग्रेजी की पर्सनैलिटी शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के प्रति शब्द से हुई है जिसका अर्थ तृषा के पूर्व काल में यूरोपियन देशों के ड्रामा नाटक में कलाकार की मुखौटा पहनकर जो ध्वनि उत्पन्न करते थे उससे ही पर्सनैलिटी कहा जाता है जिसका जिस कलाकार की ध्वनि वेशभूषा जितनी प्रभावशाली होती थी उसके लिए धीरे–धीरे पर्सनैलिटी शब्द का उपयोग किया जाने लगा परंतु आधुनिक समय में व्यक्तित्व शब्द मनुष्य की अनेकों विशेषताओं का समावेश होता है कई लोग का विश्वास है कि व्यक्तित्व एक जन्मजात गुण है जिस पर वातावरण का प्रभाव नहीं होता या गुण विशेषता व्यक्ति के व्यक्ति के हर कार्य को दिखाई देती है

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान परिवेश में प्रभावशाली व्यक्तित्व के नागरिकों की समाज में कमी होती जा रही है इसका उद्‌गम स्थल मुख्य रूप से किशोरावस्था की छात्र–छात्राओं है जो परिवार समाज एवं देश की राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रेरित कर देश की अखंडता एकता को एक सूत्र में बांधने का प्रयास करते हैं और भारतीय एकता में अपना सहयोग प्रदान करते हैं ताकि देश में नैतिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण से हमारा देश विकासशील देशों की गिनती में आ सके ज्यादातर किशोरावस्था के छात्र–छात्राएं अपने आप को हजारों की भीड़ में सबसे अलग सबसे ऊंचा और सबसे प्रिय बनाना चाहते हैं परंतु अपने भीतर छुपे हुए गुरु की पहचान और उन्हें संभालने की कोशिश नहीं कर पाते ताकि व्यक्तित्व आकर्षक और प्रभावशाली बन सके

मूल उद्देश्य

ललितपुर के षासकिय व अषासकिय छात्र/छात्राओ के व्यक्तिव अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की व्यक्तित्व अंतर्मुखी प्रतिभाओं का अध्ययन करना के छात्र–छात्राओं

1. राजकीय बालिका इण्टर कालेज ललितपुर
2. राजकीय इण्टर कालेज ललितपुर
3. राजकीय इण्टर कालेज जखौरा ललितपुर
4. राजकीय इण्टर कालेज बार ललितपुर
5. पी एन इंटर कॉलेज ललितपुर
6. नगर पालिका बालिका इंटर कॉलेज ललितपुर
7. मर्दन सिंह इंटर कॉलेज तालबेहट
8. किसान इंटर कॉलेज बिरधा

शोध की परिकल्पना

१ शहरी क्षेत्र के कन्या इंटर कॉलेज में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व एवं अंतर्मुखी प्रतिभाओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है

शहरी क्षेत्र के अशासकीय इंटर कॉलेज में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की व्यक्तित्व एवं अंतर्मुखी प्रतिभाओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है न

3 ग्रामीण क्षेत्र में के शासकीय इंटर कॉलेज में अध्ययनरत छात्र छात्रा की अंतर्मुखी व्यक्तित्व की प्रतिभा में कोई सार्थक अंतर नहीं है

४ ग्रामीण क्षेत्र में आशा सकी इंटर कॉलेज में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की व्यक्तित्व एवं अंतर्मुखी प्रतिभाओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है

शोध का सीमांकन

शोधकर्ता ने समय एवं सीमा को दृष्टिगत करते हुए उत्तर प्रदेश के ललितपुर जनपद के शासकीय एवं अशासकीय बालक बालिका इंटर कॉलेज के छात्र छात्राओं की के अध्ययन तक इस शोध को सिमंकित किया गया है ताकि व्यक्तिगत एवं अंतर्मुखी प्रतिभाओं के अध्ययन के लिए एक प्रष्नावली के माध्यम से कुल 200 छात्र–छात्राओं पर अध्ययन किया जा सके।

न्यादर्ष का चयन

प्रस्तुत षोध कार्य उत्तर प्रदेष राज्य के ललितपुर जनपद मे आने वाले षहरी और ग्रमीण क्षेत्र के 4 षासकीय और 4 अषासकीय इण्टर कॉलेज का चयन किया गया है प्रत्येक इण्टर कॉलेज से 30 छात्र एवं 30 छात्राओ का षोध कार्य हेतु चयन किया गया है

शोध विधि

प्रस्तुत षोध कार्य मे सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है

शोध कार्य में प्रस्तुत सांख्यिकी

1. मध्यमान 2. मानक विचलन

3.टी परीक्षण 4. क्रान्तिक अनुपात

प्रदत्तो का विष्लेशण एवं सत्यापन

तलिका क्रमांक–1

षहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओ के अंतर्मुखी बहिर्मुखी व्यक्त्वि की तुलना

क्र.	क्षेत्र	विद्यालय	छात्र संख्या	ड	ैव	टी का नाम	सार्थकता
1.	षहरी	षासकीय	30	186.5	42.46	0.33	0.05
2.	षहरी	षासकीय	30	190.3	43.26		

पुश्टीकरणः सारणी के अनुसार का ज मान 0.33 है जो समर्थता स्तर 0.05 के मान 2.04 से कम है अतः परिकल्पना 0.05 स्तर पर स्वीकृत की जाती है अर्थात षहरी क्षेत्र के षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो मे अध्ययनरत छात्र/छात्राओ के व्यक्तिव प्रतिभा मे कोई सार्थक अन्तर नही है।

तलिका कमांक–2

ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओ के अंतर्मुखी बहिर्मुखी व्यक्त्वि की तुलना

क्र.	क्षेत्र	विद्यालय	छात्र संख्या	ड	ैक	टी का नाम	सार्थकता
1.	ग्रामीण	षासकीय	30	170.2	27.3	2.72	0.01
2.	ग्रामीण	षासकीय	30	196.9	44.9		

पुश्टीकरणः सारणी के अनुसार का ज मान 2.72 है जो सार्थकता स्तर 0.01 के मान 2.66 से अधिक है अतः परिकल्पना 0.01 स्तर पर अस्वीकश्त की जाती है अर्थात ग्रामीण क्षेत्र के षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो मे अध्ययनरत छात्र/छात्राओ के व्यक्तित्व प्रतिभा में सार्थक अन्तर है।

तलिका कमांक–3

षहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओ के अंतर्मुखी बहिर्मुखी व्यक्त्वि की तुलना

क्र.	क्षेत्र	विद्यालय	छात्र संख्या	ड	ैक	टी का नाम	सार्थकता
1.	षहरी	अषासकीय	30	178.9	47.17	1.33	0.05
2.	षहरी	अषासकीय	30	192.6	44.67		

पुश्टीकरणः सारणी के अनुसार का ज मान 1.33 है जो सार्थकता स्तर 0.05 के मान 2.04 से कम है अतः परिकल्पना 0.05 स्तर पर स्वीकृत की जाती है अर्थात षहरी क्षेत्र के अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो मे अध्ययनरत छात्र/छात्राओ के व्यक्तित्व प्रतिभा में कोई सार्थक अन्तर नही है।

तलिका कमांक–4

ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओ के अंतर्मुखी बहिर्मुखी व्यक्त्वि की तुलना

क्र.	क्षेत्र	विद्यालय	छात्र संख्या	ड	ैक	टी का नाम	सार्थकता
1.	ग्रामीण	अषासकीय	30	164.3	25.47	1.5	0.05
2.	ग्रामीण	अषासकीय	30	175.6	31.57		

पुश्टीकरणः सारणी के अनुसार का ज मान 1.5 है जो सार्थकता स्तर 0.05 के मान 2.04 से कम है अतः परिकल्पना 0.05 स्तर पर स्वीकृत की जाती है अर्थात ग्रामीण क्षेत्र के अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो मे अध्ययनरत छात्र/छात्राओ के व्यक्तित्व प्रतिभा में कोई सार्थक अन्तर नही है।

निश्कर्श

षोध की प्रक्रिया के दौरान प्रदत्तों के संकलन, प्रदत्तो के विष्लेशण तथा परिकल्पनाओ के सत्यापन एवं परिणामों की व्याख्या के पश्चात षोधकर्ता निम्नलिखित निश्कर्शो पर पहुॅचा है।

1. षहरी क्षेत्र के षासकीय उच्चतर इंटर कॉलेजों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अंतर्मुखी व्यक्तित्व में समानता नंबर
2. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय इंटर कॉलेजों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अंतर्मुखी व्यक्तित्व में समानता का अभाव
3. शहरी क्षेत्र के अशासकीय इंटर कॉलेजों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अंतर्मुखी व्यक्तित्व व्यक्तित्व में समानता
4. ग्रामीण क्षेत्र के अशासकीय इंटर कॉलेज में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अंतर्मुखी व्यक्तित्व में समानता

सुझाव

कुछ इस शोध कार्य के अंतर्गत कुछ सुझाव शोधकर्ता शासन के समक्ष प्रस्तुत करना चाहते हैं इससे की इनको लागू कर छात्र छात्राओं का व्यक्तित्व के स्तर को ऊंचा किया जा सके नंबर

1. इस विषय के अनिवार्य प्रदान की जाना चाहिए
2. समय–समय पर इस विषय के पाठकों को नवीनता प्रदान की जाना चाहिए
3. व्यक्तित्व निर्माण के संबंध में जिला स्तरीय संभाग स्तर एवं राज्य स्तर पर प्रतियोगिताएं आयोजित की जाना चाहिए
4. अध्यापन के दौरान शिक्षक छात्र छात्राओं की समस्याओं का समाधान व्यक्तित्व के बारे में जानकारी देते हुए छात्र–छात्राओं को व्यक्तित्व निर्माण करने की रुचि पैदा की जाना चाहिए
5. प्रत्येक सप्ताह में 1 दिन छात्र छात्राओं की कक्षाओं के दौरान विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाना चाहिए जिससे व्यक्तित्व में निखार आ सके
6. प्रत्येक माह में एक बार छात्र छात्राओं के व्यक्तित्व प्रतिभा निखारने की प्रतियोगिता आयोजित की जाना चाहिए किया जाना चाहिए इसके द्वारा प्राप्त अंकों को आवश्यक रूप से छात्रों को बताना चाहिए
7. अभिभावक को अपने बालकों को व्यक्तित्व के निर्माण के बारे में वार्तालाप कर उन्हें समझाना चाहिए कि यह एक उनके लिए आवश्यक चीज है कि बच्चों का व्यक्तित्व निर्माण की ओर समय–समय पर अभिभावकों को भी ध्यान देना चाहिए
8. बालकों को इस प्रकार से खेल सामग्री उपलब्ध कराना चाहिए जिससे वह अपने अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण कर सकें नंबर
9. बालक में उत्पन्न जिज्ञासा का व्यक्तित्व निर्माण के सामान्य नियमों के द्वारा समझाना चाहिए
10. बच्चों को इस प्रकार का बाल साहित्य पढ़ने को दिया जाना चाहिए जिससे वह अपने व्यक्तित्व निर्माण और उनमें अच्छी सोच पैदा हो
11. बच्चों को समझाना चाहिए कि मोबाइल टीवी कंप्यूटर आदि में इस तरह की चीजें देखें ताकि उनका अच्छा व्यक्तित्व का निर्माण हो सके

संदर्भ सूची

1. पाठक डा.पी. डी. : षिक्षा मनोविज्ञान ,विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
2. सिंह डॉ. रामपाल : अधिगम का मानोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
3. राय पारसनाथः अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण पुस्तक मन्दिर आगरा
4. सूर्यवंषी डॉ. अनिल : ईसेन्ट पब्लिकेषन नई दिल्ली
5. कपिल डॉ. एच.के :षैक्षिक एवं समाजिक अनुसंधा, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा